काल

क्रिया के जिस रुप से क्रिया के होने के समय का पता चलता है उसे 'काल' कहते हैं ।

भूतकाल - जो समय बीत चुका है।

वर्तमान काल - जो समय अब चल रहा है ।

भविष्यत् काल - जो समय आयेगा ।

भूतकाल:- भूतकाल के छः भेद है.

१. सामान्य भूतकाल, २. आसन्नभूतकाल, ३. पूर्णभूतकाल, ४. अपूर्ण भूतकाल, ५. संदिग्धभूतकाल, ६. हेतु हेतु मद् भूतकाल.

सामान्यभूतकाल:- यह बीते हुए समय का ज्ञान कराता है। इससे यह पता नहीं चलता कि क्रिया कब समाप्त हुई ।

उदाः- मैने पत्र पढा ।

बालक चला गया ।

यह घटना हो गयी ।

वे फल खाये ।

विवेक ने पत्र लिखा ।

आसन्न भूतकालः- जिससे अभी-अभी (निकट भूत) में क्रिया का होना प्रकट हो।

उदाः उसने अभी पत्र लिखा है।
वह चला गया है।
धीरज ने लेख लिखा है।
मै आया हूँ।

पूर्णभूतकालः- जिस रुप से दूरवर्ती अतीत में क्रिया का पूर्ण होना प्रकट हो।

उदाः- दशरथ ने राम को वनवास दिया था।
पार्वतीने पाठ पढी थी।
मैन लिख था।
वह पढ़ थी।

अपूर्ण भूतकाल– क्रिया के जिस रुप से कार्य-व्यापार बीते समय में हुआ, यह प्रकट हो, परन्तु पूर्ण होना न प्रकट हो।

उदाः- बालक जाता था।
बच्चे खेल रहे।
अंजली पाठ याद कर रही थी।

सदिग्ध भूतकालः- क्रिया के जिस रुप से बीते हुए समय में होने वाले कार्य-व्यापार में संदेह प्रकट हो।

उदाः- गीता और सीता सो गयी होंगी।
लडकी गई होगी।
लडका गया होगा।

हेतु हेतुमद भूतकालः- जहाँ एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना निर्भर हो ।

जैसे :- यदि बादल आते तो वर्षा होती ।

यदि तुम अधिक परिश्रम करते, तो प्रथम आजाते ।

तुम जल्दी जाते तो गाठी मिल जाती थी ।

वह आता तो मै जाता ।

वर्तमान काल

वर्तमान काल के मुख्य रुप से चार भेद है ।

१. सामान्य वर्तमान काल. २. अपूर्ण वर्तमान काल

३. पूर्ण वर्तमान काल. ४. संदिग्ध वर्तमान काल

सामान्य वर्तमान कालः- क्रिया के जिस रुप से चालू समय में सामान्यतः कार्य-व्यापार का. होना प्रकट हो।

जैसे :- मै जाता हूँ । तुम पढते हो। वह लिखता है ।

अपूर्ण वर्तमात कालः- क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार वर्तमान काल में हो रहा है, परन्तु अभी पूर्ण नहीं हुआ ।

उदाहरणः- मै पढ़ रहा हूँ ।

वह खा रहा है ।

तुम क्या पी रहे हो ?

विवेक सो रहा है ।

अंजली बाते कर रही है ।

३. संदिग्ध वर्तमान कालः- जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने का निश्चय न हो ।

उदा:- अब उनका विमान उड़ रहा होगा ।

प्रचार्यजी कक्षा को पढ़ा रहे होंगे ।

अब बालक सोकर उठ चुका होगा ।

वाणी बाते करती होगी ।

पूर्ण वर्तमान काल. क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार वर्तमान काल में पूर्ण हो रहा है ।

जैसे :- माँ खाना पका चुकी है ।

मै पढ चुकी हूँ ।

भविष्यत काल :-

भविष्यत के भी ''चार'' भेद है ।

२. सामान्य भविष्य काल २. सातत्यबोधक भविष्यतद् काल

३. पूर्ण भविष्यत काल. ४. संभाव्य भविष्यत काल

सामान्य भविष्यतकाल:- जिस क्रिया से पता चले कि कार्य-व्यापार आने वाले काल में होगा ।

जैसे :- मै खेलूँगा . तू खेलेगी । वह खेलेगा

सातत्यबोधक भविष्यत कालः- जिस क्रिया के रुप से पता चले कि भविष्य में कार्य व्यापार जारी रहेगा ।

जैसे:- वह समय पर स्कूल जाता रहेगा ।

हम देश की रक्षा करते रहेंगे ।

पूर्ण भविष्यत काल:- जिस क्रिया के रुप से पता चले कि भविष्य में कार्य व्यापार पूर्ण हो जायेगा ।

मै इस उपन्यास को कल शाम तक पढ़ चुकूँगा ।

<u>संभाव्य भविष्यत कालः-</u> क्रिया के, जिस रुप से भविष्य में कार्य होने की संभावना आदि प्रकट हो ।

उदाः- मै मदूस जाऊँ । (शायद) वह पास हो जाये ।

वाच्य

क्रिया के जिस रुप से यह पता चले कि उसके वर्णन का मुख्य विषय कर्त्ता है, कर्म है या धातु का भाव है, उसे <u>'वाच्य'</u> कहते है ।

वाच्य तीन प्रकार के होते है ।

१. कर्तृ वाच्य, २. कर्मवाक्य, ३. भाववाच्य

कर्तृ वाच्य :- जहाँ क्रिया के विधान का विषय कर्त्ता हो ।

जैसे :- रमेश पुस्तक पढ़ता है ।
मै दिल्ली गया था ।
तुम कल क्या काम करोगे ?
बालिका सो रही हैं ।

कर्तृ वाच्य में सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है ।

<u>उदाः-</u> गोपाल खेलता है ।
राजी दूध पीती है ।

कर्म वाच्यः- जहाँ क्रिया के विधान का विषय कर्म हो ।

<u>उदाः-</u> नरेश ने पुस्तक पढ़ी जाती है ।
मुझ से हैदराबाद जाया गया था ।
तुम से क्या काम होगा ?

भाव वाच्यः- जहाँ क्रिया के विधान का विषय न कर्ता हो और न कर्म, बल्कि क्रिया का अर्थ ही विधान का विषय बने वहाँ भाव वाच्य होता है ।

उदाः- यहाँ सोया नही जाता ।

राजेष से वहाँ तक चला जायेगा ?

भाव वाच्य में क्रिया हमेशा पुंलिंग एक वचन में रहता है। भाव वाचक में वाक्यों का प्रयोग सामान्यतः नकारात्मक में होता है ।

Prepared by
B. Ram Mohan
M.A., M.Phil, HPT(Ph.D.)
APSWRS & Jr. College,
Pulivendula
YSR Kadapa (Dist).